Dainik Bhaskar- May 25, 2013

झाड़ली पावर प्लांट | बिजली उत्पादन में कमी

कोयले की कमी से एक यूनिट का उत्पादन ठप्प

■ दो में से एक यूनिट ठप

देवेंद्र शुक्ला | झज्जर

प्रदेश में बिजली संकट की एक बड़ी वजह कोयले की कमी है। पावर प्लांटों को पर्याप्त मात्रा में कोयले की आपूर्ति नहीं हो पा रही है। लिहाजा इसका सीधा असर बिजली उत्पादन पर पड़ रहा है। झज्जर के झाड़ली स्थित महात्मा गांधी थर्मल पावर प्लांट की भी यही स्थिति है। यहां बिजली बनाने को पानी तो पर्याप्त मात्रा में है, लेकिन कोयला नहीं है। लिहाजा दो में से एक ही यूनिट चल पा रही है।

झाड़ली में इंदिरा गांधी सुपर थर्मल पावर प्लांट की 500 मेगावाट की तीसरी यूनिट का शुभारंभ अप्रैल माह में केंद्रीय ऊर्जा राज्य मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने सीएम भूपेंद्र सिंह हुड्डा की अगुवाई में किया। सूत्रों की मानें तो जब इंदिरा गांधी थर्मल पावर प्लांट अपनी क्षमता 1000 से 1500 मेगावाट हो जाने की खुशी मना रहा था, वहीं पड़ोस में महात्मा गांधी थर्मल प्लांट का प्रबंधन कोयला संकट का रोना रो रहा था। प्लांट सूत्रों की मानें तो शुरू से ही 1320 मेगावाट क्षमता के साथ शुरू हुआ महात्मा गांधी थर्मल प्लांट कोयला संकट झेल रहा है। वह अपने दोनों प्लांट पूरी क्षमता के साथ चला सके, इसके लिए उसे कोयला नहीं मिल पा रहा है।

उल्लेखनीय यह भी है कि दोनों ही प्लांट के लिए झारखंड से कोयले से लदी मालगाड़ी आती है, लेकिन सप्लाई सबसे ज्यादा इंदिरा गांधी थर्मल प्लांट में होती है। कोयले की कमी के कारण महात्मा गांधी थर्मल प्लांट हरियाणा को 90 प्रतिशत बिजली नहीं दे पा रहा है, जबकि दस प्रतिशत ही बिजली वह दिल्ली को देता है।

महात्मा गांधी थर्मल पावर प्लांट

स्थापित	- झाड़ली
निर्माण वर्ष	-2009
संचालन	-सीएलपी कंपनी
यूनिट	- 2 प्लांट
क्षमता	-1340 मेगावाट

प्लांट की मौजूदा स्थिति

बिजली उत्पादन टारगेट	-1320
हो पा रहा है रोजाना	- 660
कोयला चाहिए	-25 हजार टन रोजाना
मिल रहा है	- 15 से 18 हजार टन

झाड़ली पावर प्लांट की चिमनी जिन्हें कोयले की जरूरत है।

इंदिरा गांधी थर्मल में नहीं संकट

झाड़ली में ही महात्मा गांधी थर्मल पावर प्लांट के सामने इंदिरा गांधी सुपर थर्मल पावर प्लांट है। अहम बात यह है कि यहां कोयले की आपूर्ति का कोई संकट नहीं है। इंदिरा गांधी थर्मल पावर प्लांट प्रबंधन की मानें तो उनके यहां पानी और कोयले स्टोरेज के अलावा रुटीन की सप्लाई बेहतर है। ऐसे में महात्मा गांधी थर्मल पावर प्लांट कोयले की दुविधा को सरकारी और गैर सरकारी का अंतर होना बताता है। स्टाफ का कहना है कि इंदिरा गांधी थर्मल पावर प्लांट का संचालन केंद्रीय ऊर्जा मंत्रालय द्वारा संचालित एनटीपीसी करती है। लिहाजा कोयले का संकट नहीं होने दिया जाता, जबकि महात्मा गांधी थर्मल प्लांट का संचालन निजी कंपनी सीएलपी इंडिया के हाथों में है।

आगे क्या : अगस्त में होगा संकट

इंदिरा गांधी सुपर थर्मल पावर प्लांट की 1500 मेगावाट क्षमता की तीन में से यूनिट नंबर एक 1 जून तक एनुअल मेंटेनेंस के कारण बंद है। इसके कारण यहां 1000 मेगावाट ही बिजली रोजाना पैदा हो रही है। इस तरह इंदिरा गांधी थर्मल पावर प्लांट भी हरियाणा को 500 मेगावाट बिजली रोजाना कम दे पा रहा है। यही नहीं अगस्त माह में बिजली संकट होगा, क्योंकि शैड्यूल के अनुसार यहां की यूनिट नंबर दो भी इस पूरे माह मेंटेनेंस के लिए शट डाउन रहेगी। जुलाई और इसके बाद वर्ष 2013 के अंत तक यह प्लांट अपनी पूरी क्षमता यानी 1500 मेगावाट के साथ चलेगा। तीसरी यूनिट का एनुअल शट डाउन वर्ष 2014 में हो सकेगा। इसी प्रकार महात्मा गांधी थर्मल पावर प्लांट को अगर पर्याप्त कोयला नहीं मिला तो बिजली उत्पादन पचास प्रतिशत ही रहेगा।

▶ यह सही है कि हमारे प्लांट को कोयला नहीं मिल पा रहा है। अगर पर्याप्त मात्रा में कोयला मिले तो हम बेहतर बिजली पैदा कर सकते हैं। हम मजबूर हैं।

तरुण बजाज, महाप्रबंधक टेक्नो कमर्शियल सीएलपी इंडिया, झाड़ली